

नौकरी की किताब

सत्र 3: अधिकार और प्रेरणा के साथ एक पुस्तक के रूप में कार्य

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 3 है, अधिकार और प्रेरणा के साथ एक पुस्तक के रूप में कार्य।

परिचयात्मक प्रश्न [00:24-1:06]

तो, यहाँ समस्या यह है कि यदि अय्यूब के मित्र जो कहते हैं उनमें से अधिकांश गलत हैं, और यदि अय्यूब स्वयं जो कुछ बातें कहता है वह भी गलत हैं, तो हम पुस्तक के बारे में कैसे सत्य के रूप में बात कर सकते हैं? हम इसे अधिकार कैसे मानें? यह भगवान से कैसे आता है? इसलिए, हमें अय्यूब के बारे में एक प्रामाणिक पुस्तक के रूप में - एक प्रेरित पुस्तक के रूप में अय्यूब के बारे में थोड़ी बात करने की आवश्यकता है। तो, आइए देखें कि हमें यहां क्या मिला है।

प्रेरणा: ईश्वर इसका स्रोत है [1:06-1:58]

सबसे पहले, हमें अपनी शर्तों को समझने की जरूरत है। जब हम प्रेरणा के बारे में बात करते हैं, तो हमारा तात्पर्य यह है कि पुस्तक का स्रोत ईश्वर में है। प्रेरणा का अर्थ कान में किसी प्रकार की फुसफुसाहट की आवाज या मन में उपजे विचार नहीं हैं। प्रेरणा इंगित करती है कि स्रोत ईश्वर है। निःसंदेह, नए नियम का यही अर्थ है जब वह परमेश्वर के वचन को परमेश्वर द्वारा प्रस्फुटित होने के बारे में बात करता है। इसका स्रोत ईश्वर है। तो, प्रेरणा से हमारा यही मतलब है। हमें यह सोचने की जरूरत नहीं है कि ईश्वर एलीपज़ या ज़ोफ़र या बिलदद के कानों में किसी तरह ग़लत विचार फुसफुसा रहा है। तो, यह प्रेरणा है--प्राधिकरण।

अधिकार और हमारी विनम्र प्रतिक्रिया [1:58-2:53]

प्राधिकरण का अर्थ है कि पुस्तक वह जानकारी देती है जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं। प्राधिकार का इससे लेना-देना है। प्राधिकरण इंगित करता है कि पुस्तक को बोलने का अधिकार है।

और निःसंदेह, यह इसकी प्रेरणा के कारण है। ईश्वर की प्रेरणा के आधार पर, पुस्तक को बोलने का अधिकार है, और यही इसे एक आधिकारिक स्थिति प्रदान करता है। लेकिन सिर्फ बोलने का ही अधिकार नहीं है। यह जो बोलता है उसमें सही है क्योंकि यह अच्छा अधिकार है, बुरा अधिकार नहीं। इसलिए, यह ऐसी जानकारी देता है जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं और जिसे हमें प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। इसी तरह आप अधिकार के साथ जवाब देते हैं।

रहस्योद्घाटन और बुद्धि की पहचान संदेश [2:53-5:19]

हम पुस्तक के बारे में रहस्योद्घाटन के रूप में भी बात करते हैं। हम बाइबल को ईश्वर द्वारा स्वयं का रहस्योद्घाटन कहते हैं। और इसका मतलब है कि हमें किताब सच्ची और भरोसेमंद लगती है, उसी तरह की बातें जिनके बारे में हमने दूसरे शब्दों में बात की है। यह हमें यह भी बताता है कि किताब क्या कर रही है और क्या नहीं कर रही है। पुस्तक क्या नहीं कर रही है, इस बारे में हमारी चर्चा पर दोबारा विचार करें। यह विचार कि यह ईश्वर का स्वयं का रहस्योद्घाटन है, का अर्थ है कि हम उस रहस्योद्घाटन में पुस्तक के अधिकार को खोजने जा रहे हैं जो यह हमें देता है। यह उस संदेश में रहस्योद्घाटन है, जिसकी पुष्टि उसमें मौजूद ज्ञान साहित्य के माध्यम से की जा रही है। और इसलिए, इसका रहस्योद्घाटन और इसका अधिकार भाषणों में वर्णित कथा से अधिक ज्ञान संदेश से जुड़ा हुआ है। हमें संदेश को समझना होगा क्योंकि अधिकांश पुस्तक गलत सोच वाली है। यह गलत सोच रखने के लिए है। ताकि सोचने के गलत तरीके को देखकर हमें सोचने के सही तरीके को पहचानने का प्रयास करने का मौका मिले।

इसलिए, हमें यह पहचानने की ज़रूरत है कि किताब किस चीज़ को सच मानती है। पुस्तक की विषय-वस्तु में मौजूद हर चीज़ किसी प्रकार की सच्चाई या सच्चे संदेश की पुष्टि नहीं कर रही है। हमें सावधान पाठकों के रूप में इसे समझना होगा। वफ़ादार व्याख्याकार हमेशा यही करते हैं; पता लगाएँ कि पाठ की पुष्टि क्या है। अय्यूब के दोस्तों को सच बोलने वाला नहीं माना जा सकता, हालाँकि कभी-कभी वे सच बोलते हैं। और कभी-कभी, वे जो कहते हैं उसका झूठ सच से थोड़ा सा अलग होता है। आखिरकार, वे सबसे प्रभावी झूठ हैं, जो बिल्कुल सच जैसे लगते हैं। लेकिन इसी

तरह, सच बोलने के लिए स्वर्गीय प्रतिपक्षी पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। फिर, कभी-कभी वह ऐसा करता है। हम उस बारे में बात करेंगे।

प्राधिकार अपनी ऐतिहासिकता में नहीं है [5:19-6:37]

शायद एक अधिक कठिन मुद्दा, और मैं चाहता हूँ कि आप इसके बारे में ध्यान से सोचें, वह यह है कि पुस्तक का अधिकार इस बात से जुड़ा नहीं है कि यह वास्तविक अतीत में वास्तविक घटनाओं का सटीक विवरण है या नहीं। इसे कथा के माध्यम से सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता है। इसे ज्ञान के माध्यम से सत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम मान लें कि कहानी झूठी है, या ऐसा कभी हुआ ही नहीं, बल्कि हमें सावधानी से सोचना होगा। अधिकार इसकी ऐतिहासिकता में नहीं है, क्योंकि यह उस तरह की किताब नहीं है। सत्य उसकी ऐतिहासिकता पर निर्भर नहीं करता है, कि क्या घटनाएँ वास्तव में घटित हुई हैं, क्या वे वास्तव में वास्तविक अतीत की घटनाएँ हैं। सत्य उस पर निर्भर नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि वे नहीं हुए, लेकिन हमें बस इस पर ध्यान से सोचना होगा। और, अंत में, जिस चीज़ में हमारी रुचि होनी चाहिए वह है पुस्तक का अधिकार।

यीशु के दृष्टान्तों के समान [6:37-7:41]

और यह पुस्तक किसी कथात्मक घटना की पुष्टि करने से अधिक ज्ञान की शिक्षा देने की पुष्टि कर रही है; हमें इसके प्रति जागरूक रहना होगा। यह वही बात है जो यीशु के दृष्टान्तों के साथ घटित होती है। वे आख्यान हैं, लेकिन यीशु उन्हें वास्तविक अतीत की वास्तविक घटनाओं के रूप में प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं। उनके पास उनके बारे में यथार्थवाद है, लेकिन उनमें आम तौर पर कुछ अवास्तविक तत्व भी होते हैं जो दृष्टान्त को यथार्थवादी सेटिंग बनाते हैं, लेकिन कुछ असामान्य, यहां तक कि अजीब चीजें भी घटित होती हैं। यही बात इस दृष्टान्त को व्यावहारिक बनाती है। यही बात हम यहां अय्यूब के साथ भी पाते हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि यह एक दृष्टान्त है, लेकिन उसी तरह, यह उन दृष्टान्तों की तरह है जो वास्तविक घटनाओं पर निर्भर नहीं हैं। यह कुछ मायनों में बहुत

यथार्थवादी है और कुछ मायनों में बहुत अवास्तविक है। और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम इसके बारे में और अधिक बात करेंगे।

प्राधिकरण अपने ज्ञान संदेश में [7:41-10:03]

इसलिए, अधिकार ऐतिहासिकता में नहीं है, और सत्य ऐतिहासिकता पर निर्भर नहीं करता है। अधिकार पुस्तक के ज्ञान संदेश में है, भले ही ये किसी वास्तविक अतीत की वास्तविक घटनाएँ हों। बुद्धि स्वयं घटनाओं से भी गहरे सत्य तक पहुँचती है। बुद्धि एक ऐसे सत्य की तलाश में है जिसे आवश्यक रूप से घटनाओं के प्रकट होने में ही नहीं देखा जा सकता है। हम अपने जीवन में चीज़ों को घटित होते हुए देख सकते हैं, और वहाँ घटनाएँ हमारे सामने होती हैं। लेकिन हम उनका क्या करते हैं? हम उनके बारे में कैसे सोचते हैं? हम अपने जीवन में होने वाली घटनाओं पर बुद्धिमानी से कैसे प्रतिक्रिया देते हैं?

घटनाओं के सामने आने से बुद्धि स्वतः नहीं आती। बुद्धिमत्ता तब आती है जब हम घटना से परे देखते हैं, घटना में गहराई से देखते हैं, और उस सच्चाई को समझने के लिए घटना से परे देखते हैं जिसे हमें देखने की ज़रूरत है; वह ज्ञान जिसे हम प्राप्त कर सकते हैं। और उस अर्थ में, ज्ञान घटनाओं से परे है। और जैसे मसीह के दृष्टांतों का ज्ञान उन घटनाओं से आगे निकल जाता है जिन्हें वह अपनी कहानियों के लिए एक साथ रखता है, वैसे ही, हम इसे अय्यूब की पुस्तक में सत्य पाएंगे। बुद्धि एक गहरे सत्य तक पहुँचती है। विचारों में सच्चाई है, सच्चाई है जिसे हमें उन विचारों में समझने की ज़रूरत है जो किताब प्रस्तुत करती है, ऐसी चीज़ें जो देखी नहीं जा सकतीं। और जो देखा जा सकता है उससे जुड़े होने के बजाय, यह एक प्रकार का सत्य है जिसे ज्ञान हमारी तत्काल दृष्टि से परे ले जाता है। और इसलिए हमें उन विचारों को देखना होगा जो पुस्तक प्रस्तुत कर रही है। यहीं पर पुस्तक का अधिकार निहित है।

ईश्वर को जानना [10:03-12:03]

आइए मैं आपको एक और विचार देता हूँ। हम इसके बारे में ईश्वर द्वारा स्वयं के रहस्योद्घाटन के रूप में बात करते हैं। हालाँकि, अंत में, इस पुस्तक में हमें जो रहस्योद्घाटन मिलता है वह इस बारे में थोड़ा और अधिक है कि ईश्वर कैसे कार्य करता है और कैसे कार्य नहीं करता है। यह हमें केवल

सीमित जानकारी देता है कि ईश्वर कौन है। यह एक समस्या है, क्या यह हमारे साथ नहीं है? हम ईश्वर को जानना चाहते हैं, और हमें लगता है कि हम उसे पवित्रशास्त्र के पत्रों के माध्यम से जान सकते हैं। लेकिन फिर भी हमें ऐसा लगता है, सबसे पहले, कि हमें वास्तव में उसे जानने में परेशानी हो रही है क्योंकि यह उन लोगों के साथ हमारे संबंधों के समान नहीं है जिनसे हम हर दिन मिलते हैं और बातचीत करते हैं।

और इसलिए, हमें ऐसा लगता है कि कुछ बाधाएँ हैं। सबसे बड़ी बाधा यह है कि वह भगवान है, और हम नहीं हैं। और इसलिए उसे हम बहुत गहराई से नहीं जान पाते। हम उसे उस हद तक जान सकते हैं जिस हद तक उसने स्वयं को प्रकट किया है, लेकिन उसके तरीके हमारे तरीके नहीं हैं। और इसलिए, हम उसके बारे में सब कुछ नहीं जान सकते। जितना अधिक हम यह सोचने लगते हैं कि ईश्वर को हम पूरी तरह से जानते हैं, संभवतः उतना ही अधिक हमने उसे अपनी छवि में बना लिया है। इसलिए, हमें यह पहचानना होगा कि ईश्वर के ज्ञान की कुछ सीमाएँ हैं जिन्हें हम प्राप्त कर सकते हैं।

प्रकाशितवाक्य का बाइबिल और पाठ्यक्रम चित्रण [12:03-14:23]

उसने खुलासा किया है कि वह क्या कर रहा है, और ऐसा करते हुए, उसने अपने कुछ हिस्सों का खुलासा किया है जिन्हें हम जान सकते हैं। मैं तुम्हें एक उदाहरण देता हूँ। जब मैं एक पाठ्यक्रम तैयार करता हूँ और उसे छात्रों को सौंपता हूँ, तो मैं उन्हें कुछ बता रहा होता हूँ। मैं पाठ्यक्रम के लिए अपनी योजनाओं, पाठ्यक्रम में अपने उद्देश्यों का खुलासा कर रहा हूँ, और मैं उन्हें बता रहा हूँ कि उनसे पाठ्यक्रम में भाग लेने की उम्मीद कैसे की जाती है। वास्तव में, इस सीखने के अनुभव में भागीदार बनने के लिए। वे महत्वपूर्ण चीजें हैं, और पाठ्यक्रम इसी के लिए है: मेरी योजनाओं और उद्देश्यों को प्रकट करना ताकि वे सक्रिय भागीदार के रूप में भाग ले सकें। अब, यदि वे पाठ्यक्रम के प्रति बहुत चौकस हैं, तो वे एक प्रोफेसर, एक व्यक्ति और एक शिक्षक के रूप में मेरे बारे में कुछ समझ या अनुमान लगा सकते हैं। वे यह भी समझ सकते हैं कि मैं व्यवस्थित हूँ या नहीं, मेरे पास डिज़ाइन की प्रतिभा है या नहीं। वे उस सिलेबस से मेरे बारे में कुछ बातें बता सकते हैं। और

उस अर्थ में, पाठ्यक्रम मेरे बारे में थोड़ा सा प्रकट करने की कोशिश कर रहा है, भले ही यह मेरी योजनाओं और उद्देश्यों पर केंद्रित हो।

मुझे लगता है कि बाइबल के बारे में एक पाठ्यक्रम की तरह सोचने का लाभ है। इसके पत्रों में, भगवान ने अपनी योजनाओं और उद्देश्यों, अपने राज्य और उस राज्य में हमारी क्या भूमिका है, इसका खुलासा किया है। उन्होंने हमें उनके काम में भाग लेने, उनके साथ भागीदार बनने के लिए काफी कुछ दिया है। उन्होंने हमें एक प्रक्रिया में अपने साथ भागीदार बनाने के लिए अपनी छवि में बनाया है। और इसलिए, उसने हमें यह जानने के लिए काफी कुछ दिया है कि उसकी योजनाओं और उद्देश्यों में भाग लेने के लिए हमें क्या करने की आवश्यकता है। रास्ते में, हम उसके व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं, लेकिन वहाँ और भी सीमाएँ हैं।

सारांश [14:23-15:17]

इसलिए, जब हम अय्यूब की पुस्तक और उस रहस्योद्घाटन के बारे में सोचते हैं जो यह हमें प्रदान करता है, तो हम समझते हैं कि यह हमें ईश्वर के कार्य के बारे में जानकारी प्रदान करता है, वह कैसे काम करता है, और वह कैसे चाहता है कि हम उसके बारे में सोचें, लेकिन यह नहीं देगा ईश्वर जो करता है वह क्यों करता है इसकी सभी व्याख्याएं और हमें ईश्वर के तर्क पर एक अंतरंग अंदरूनी नजरिया प्रदान करती हैं। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हमें ये भेद करने होंगे। तो, हमें एक किताब मिली है जो भगवान के प्रेरित शब्द का हिस्सा है। इसका स्रोत ईश्वर में है। हमारे पास एक ऐसी पुस्तक है जो जिस बात की पुष्टि करती है उस पर अधिकार के साथ बात करती है - अपना ज्ञान संदेश। और हमसे उस प्राधिकारी के प्रति समर्पण की अपेक्षा की जाती है।

अधिकार के निहितार्थ और उसके प्रति हमारी अधीनता [15:17-16:20]

एक बार जब हम बाइबल को आधिकारिक रूप से स्वीकार कर लेते हैं, तो हम स्वयं को चुनने और चुनने की विलासिता, स्वतंत्रता की अनुमति नहीं दे सकते। कहने का मतलब है, ठीक है, मैं वह हिस्सा लूंगा, और मैं वह हिस्सा नहीं लूंगा। आखिरकार, उदाहरण के लिए, हमारे पास अपनी सरकारों को यह कहने की आज़ादी नहीं है कि हम कर के इस हिस्से का भुगतान करेंगे, लेकिन उस हिस्से का नहीं। हम अधिकार के अधीन हैं। और एक बार जब हम आधिकारिक संदेश को

समझ लेते हैं, तो हम खुद को उस संदेश के प्रति एक प्रेरित अंश के रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं जिसका अधिकार है। और यह हमें थोड़ा-सा बताता है कि ईश्वर कैसे कार्य करता है और कैसे नहीं। यह उस प्रकार का ज्ञान संदेश है जिसकी पुष्टि अय्यूब की पुस्तक में हमारे लिए की गई है। और हम इसके हर एक अंश को समझना चाहते हैं जो हम कर सकते हैं।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 3 है, अधिकार और प्रेरणा के साथ एक पुस्तक के रूप में कार्य। [16:20]